

१८५०

२०००

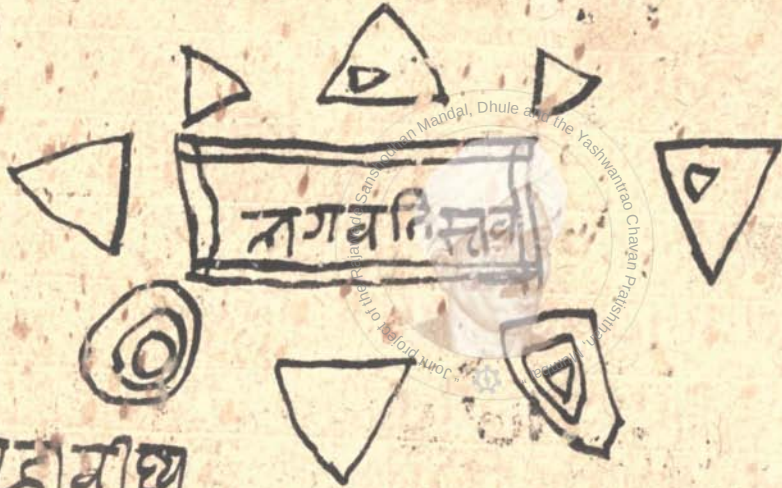
रामकृष्णकृत श्रीगवलीस्तनत्रय



६९८/स्त्री:

१२४

(५)



श्रीवाद्य

महावाद्य

(2)

ॐ नमः

श्रीगणेशाय नमः॥ अयि गिरिनंदिनं नंदितमे
दिनि विश्वविनोदिनं नंदितमे॥ गिरिवरविंध्यशि
रोद्धिनिवासिनि विष्णुविद्यानिर्गंजिष्णुमते॥
नगवतिहेशितिकंठकुटुबिनिस्तूरि कुण्डलित
निस्तूतिहते॥ जयजयदेवहिषासुरमर्दनिर
म्यकपर्दिनिशैलस्तुते॥ १॥ सूरवरवर्षिणि
दुर्धरधर्षिणि दुर्मुखमर्षिणि हर्षरते॥ त्रिभुव
नपोषिणि शंकरतोषिणि कल्मषघोषिणि

१

(2A)

द्योषरते॥ दनुजनरोषिणि दुर्मदरोषिणि दुर्म
दशोषिणि सिंधुसुते॥ जयजयहे॥ २॥ अयि
जगत्पदं बकदं बवन प्रियवासनिवासरते॥
किखरि शिरोमणि तुंगहि मात्नयः शृग निज
यमध्यगते॥ मदमधुरमधुकैटभगं जनिरा
स निराम निरामरते॥ जयजयहे॥ ३॥ अयि
निजद्वंद्वतिमात्र निराकृतधूम्रवित्प्रोचन
रुमराते॥ समरविशोषितशोषितविल

॥ ईं टं दीं श्रीं वं पीं गां गुं गां आहु ॥

(3)

पुस्तक

समुद्रवशो शिवी जन्तसे ॥ शिवेव शुं न
निशुं न महा हव तपित नूत पिशा च पते ॥ ज
य जय हे ॥ ४ ॥ अधिशति खंड विखंडी त
खंड विऊं दित शुंडग जाधिपते ॥ रिपु गज
मंड विदारण बंड पर क ॥ शुंडमृगाधिपते ॥
निजन्तु जदंड नियातित चंड विघाटित शुं
डनटाधिपते ॥ जय जय हे ॥ ५ ॥ धनुरनुषं
गरणाय सगपरिस्फुरदंगन टकटके ॥

२

(3A)

कनकपिशगप्रशक्तनिषंगरसद्रुतशृंगह
तावदुके॥कृतचञ्चरंगबलहृतीरंगघटव
रुंगरटवदुके॥जयजयहे॥६॥अपिर-
रादुमिदशात्रुवधैधरदुधैरनिजैरशक्ति
नृते॥चतुर्विचारधुरगामहायशयदुत
आधिपते॥दलितदुरीहदुराशयेत
दुर्नितिदानवदूरदूरतमातेजयजयहे॥७॥
अपिशरगागतवैरिवधूवरवीरवराभ

(4)

५॥१॥

यद्यधिकरो॥ त्रिभु नमस्तकश्रुत्नदिरो
 ॥ धिनिरोधिततामन् एतदकरे॥ दुर्नमि
 तान्दुदुभिजा मुहमुत्तरीहृतदिडुक
 ॥ जयजयहे॥ ॥ ॥ मुरत्नन्म। तर्तयेयि
 तथेयितथाचिनकेत्तरन्तरं॥ दूतक
 कुरुपकत्तथमदिकतात्तकुत्तहत्तगा
 नरते॥ धुक्कदधुक्कदधिमधितध्वनी
 धीरम्हं॥ निनादरते॥ जयजयहे॥ ॥ ॥

(4A)

जयजय जयजय जयजय जयजय जयजय जयजय
त्य विष्णु नते ॥ जय जय ॥ शिं शिं मि शिं
ननेदुर सिं जित मे हित नूत पते ॥ नटित
जटा ॥ जटी नट नय न ॥ जाट कन दि ह्य
नटा घर ते ॥ जय जय हे ॥ १० ॥ अयि सु
मनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः सुमनः
॥ का तियु ते ॥ श्रित ज नीर जल ॥ र ज नी
नी ॥ ज नी व र क द ते ॥ सुन य ज रि

५) नमरभरन्नमरभरन्नममराधिपतेः॥

जयजयहे॥११॥महितमहाहवमहत्तम

नद्विक्रतेत्रिकतरत्रकचत्वरते॥त्रिर

चिततत्रिकयत्रिकमात्रिकत्रिकत्रिक

द्विकवगद्विते॥शक्तिरुतपुत्रसमुद्रसि

तारुणातद्वजयद्ववसद्वलिते॥जयजय

हे॥११॥अविरत्रगडुत्तैगेन्मदमेदुर

मत्तमतेगजरासुजसुतेत्रिचुवननूषण

(5A)

नूतकत्तानिधिरूपज्योनिधिराजसुते॥
अयिसुदसीजनतात्तसमानसमोदनम
न्मधराजसुते॥ जयजयहे॥ १३॥ कसल
दत्तामलकोमलकांतिकलाकलिताम
लनातलतते॥ सकलनित्तासकलानि
त्तायक्रमकेलिचलत्तातहंसकुले॥ अ
यिकुलसंकुलकुंतलमंदलमौलिमिल
दकुलानिकुले॥ जयजयहे॥ १४॥

(6)

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

कैतनमुरलीरववाजितरुहेजितनत
जितकोकितनमंजममते॥पिलितमिलि
दमनोरुखंजितरंजितदौलनिनुंजगते॥
निजगणनूतपहसुशब्दीगणसन्त
न्तकैलिततैजयजयहे॥१५॥को
टितटपीतदुरूतविचित्रमयूवतीरत
चंद्रकृते॥पणतसुगमुरदौलिससुरदं
शुक्लसन्नखवंदकृतजितकनकावलि

५

शरु रा

मौलिपदोर्जितनिर्झरः न कुचे जय ज
य हे०॥१६॥ विजितसहस्रकरैकसहस्र
कनुते॥ कृतसुरतारक संगरतारक संग
रतारकसुनुते॥ सुरयसमाधिसमानस
माधिसमानसमाधिषु जातरते जय जय
हे०॥१७॥ पदकदमत्ने करुणादित्तये वि
रिवस्पतियो नु रिनसशिवे॥ अथिकमत्ने
कमत्ना तित्तयेकमत्नानित्तयः सकथं

(6A)

(७)

प्राप्तः ॥ ८ ॥

नवे॥ तव परमेव पदं पदमस्त्यनुशील्यते॥
मम किं न शिवे॥ जय जय हे॥ १८॥ कनक
नेमसकदलिकजलैरनुषिं॥ चतिते गण
रंगानुवं॥ नजति सकिं चराचाकुचकुंज
तटीपरिं॥ नमुरानुनवं॥ तव चरणं कर
वाणिनतामरवाणिनिदेहि शिवे॥ जय जय
हे॥ १९॥ तव विमलेंदुकलेंदुमलेंदुमलें
कल्यन्तनुकल्यते॥ किमु पुरुदूतपुरे

६

(7A)

हुमुरवी सुमुरवी निरसौ विमुरवी क्रियते॥
मम कुम तं शिवमान धने न वता ह्यप्य
किमु न क्रियते॥ यं जे नय हे॥ २०॥ अयि
मपि ही न दया नु तया ह्यय न तया न वि
त च्य मु मे॥ अयि जग तो ज न री त य या नि
तथा तु नि ता सि न या पर मे॥ य दु चित म
त्र न व त्पु री कुरु ता दु रु ता प म या परे मे॥
जय जय हे॥ २१॥ स्त त्मी त स्त व मि तः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

(४)

सुसमाधिना नित्यमतो यमतो नुदिने नवे
त ॥ परमयारमया सनिषे व्यते परिजनो रिजनो
नुदिने नवे ॥ २२ ॥ रमयति कित्ति कर्षत्येष
चित्ते वराणामवर इव तस्माद्गमकः क
वीनां ॥ अकृतसुकृतिगम्यं पद्यै कुरुमं
स्तवनमवनहेतुं प्रीयते विश्वमातुः ॥ २३ ॥
इति श्रीरामकृष्णकृतौ नगवतिस्तवनं सं
पूर्णं ॥ ॥ ७ ॥ ॥ मत्नीषीतं पं-मप्याराम ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com